उज्बेकिस्तान के राष्ट्रपति द्वारा आयोजित भोज के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

दिनांक 26 अप्रैल, 2006
ताशकंद, उज्बेकिस्तान

मुझे और मेरे शिष्टमंडल का जिस गर्मजोशी के साथ स्वागत और आथित्य-सत्कार किया गया उसके लिए मैं उज्बेकिस्तान की सरकार तथा इसकी मिलनसार जनता का तहेदिल से आभार व्यक्त करता हूं।

उज्बेकिस्तान की यात्रा मेरे लिए इतिहास को गहराई से समझने जैसा अनुभव है। उज्बेकिस्तान के साथ हमारे बहुत पुराने सभ्यताई संबंध हैं।

उज्बेकिस्तान के प्रमुख शहरों—समरकंद, बुखारा और खिवा—में पिछली सदी के शुरूआती वर्षों तक भी भारतीय व्यापारियों के ऐसे समुदाय थे जो उज्बेक लोगों के साथ मेलमिलाप से रहते और काम करते थे।

ताशकंद का नाम हमारी स्मृतियों में अमर है क्योंकि इसका संबंध भारत के एक महान सपूत—श्री लाल बहादुर शास्त्री से जुड़ा हुआ है। आज अपराह्न में जब मैं शास्त्री जी के स्मारक पर श्रद्धासुमन अर्पित कर रहा था तब मेरे मन में उज्बेकिस्तान की सरकार और यहां के लोगों के प्रति कृतज्ञता की भावना जाग उठी कि किस तरह से वे हमारे स्वर्गीय नेता को निरंतर अपनी श्रद्धांजलि देते आ रहे हैं।

भारत उन देशों में से एक था जिन्होंने 1992 में उज्बेकिस्तान के साथ सबसे पहले राजनयिक संबंध स्थापित किए थे। वैसे हमने अप्रैल, 1987 के शुरू में ही ताशकंद में एक भारतीय कान्सूलेट खोल दिया था।

राष्ट्रपति जी, उज्बेकिस्तान ने बहुआयामी चुनौतियों का मुकाबला करने में जो सफलताएं हासिल की हैं उनकी हम सराहना करते हैं। आपकी सफलता न केवल इस देश के लोगों के लिए ही, बल्कि पूरे मध्य एशिया के लिए भी महत्वपूर्ण है। पिछले वर्ष अप्रैल में आपकी भारत यात्रा हमारे संबंधों को मजबूत बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित हुई। उज्बेकिस्तान ने पिछले वर्ष अपने घरेलू सकल उत्पाद में 7% की वृद्धि दर्ज की है। त्वरित विकास हेतु विदेशी निवेश आकर्षित करने की आपकी योजनाएं काफी प्रभावी हैं। भारत कृषि तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से लेकर खनन व हाइड्रोकार्बन के क्षेत्रों में परस्पर लाभ हेतु आपका भागीदार बनने के

लिए तैयार है। यद्यपि हमारे व्यापार और आर्थिक संबंध बढ़ रहे हैं, फिर भी हमें अभी इस क्षेत्र में बहुत कुछ करने की जरूरत है। ताशकंद में जवाहरलाल नेहरू भारत उज्बेकिस्तान सूचना प्रौद्योगिकी केन्द्र जिसका आज उद्घाटन किया गया है, से इस क्षेत्र में सहयोग के एक नए युग की शुरूआत होगी।

हमारा साक्षा उद्देश्य अपने देशवासियों के लिए अमन-चैन और खुशहाली लाना है। आतंकवाद एक ऐसा खतरा है जिसका मुकाबला मिलकर किया जाना चाहिए। मध्य एशिया में स्थायित्व और खुशहाली न केवल भारत के, बल्कि समूचे विश्व समुदाय के हित में है। इस लक्ष्य तक उज्बेकिस्तान के बगैर नहीं पहुंचा जा सकता है इसलिए उसे इसमें आगे आना होगा।

मुझे इस बात से हार्दिक खुशी हुई है कि हमारे देश के नृत्य, संगीत और फिल्में आपके देश में काफी लोकप्रिय हैं। हमें अपनी अतुल्य और विशाल समृद्ध विरासत से प्रेरणा मिलती है। मैं यहां उज्बेकिस्तान के महान दार्शनिक और कवि अलीशर नावोई के कुछ शब्दों को प्रस्तुत करना चाहूंगा जो उन्होंने 565 वर्ष पहले कहे थे:-

"इस धरती पर आनन्द, सुख, मधुर गीतों और
मनमोहक वाटिकाओं का वास हो,
दुनिया के सिंहासन पर शांति विराजमान हो,
और इसके अभिनंदन के लिए सभी लोग एकत्र हों।"

आपने जिस गर्मजोशी के साथ हमारी मेहमाननवाजी की है मैं उसके लिए फिर से आपको धन्यवाद देता हूं।

अब आप मेरे साथ मिलकरः

- राष्ट्रपति श्री इस्लाम कारिमोव और श्रीमती कारिमोव के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली के लिए,

- उज्बेकिस्तान के लोगों की खुशहाली और समृद्धि के लिए,

- भारत और उज्बेकिस्तान के बीच चिरकालिक मैत्री संबंधों की कामना करें।

....